मोतिहारी विश्वविद्यालय के अंतर्गत
बी.ए. 6th सेमिस्टर की अंतिम परीक्षा 2023,
मुख्य विषय- हिन्दी की दूसरा (HIN-HC-6026)
परचा के लिए प्रस्तुत
शैक्षणिक परियोजना कार्य

विषय-

नाटकीय तत्वों की दृष्टि से ध्रुवस्वामिनी : एक समीक्षा

निर्देशक :
सिकन्दर आलवारुल इसलाम
सहयोगी अध्यापक एवं विभागाध्यक्ष
हिन्दी विभाग, खारुपेटिया महाविद्यालय
जिला- दरंग (असम)

प्रस्तुतकर्ता-
रुबीना खातून
बी.ए. 6th सेमिस्टर
मुख्य विषय- हिन्दी
खारुपेटिया महाविद्यालय
रोल UA-201-248 नं- 0265
पंजीयन नं : 20049533 सन: 2020-21

ESDT-2081 Date:
DEPARTMENT OF HINDI Kharupetia College, Darrang (Assam)

KHARUPETIA COLLEGE
Estd - 1981
KHARUPETIA, DARRANG

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित करते हुए मुझे हर्ष होता है कि **रूबीना खातून** ,बी.ए. 6th सेमिष्टर , खारुपेटीया महाविद्यालय ने मेरे निर्देशन में **"नाटकीय तत्वों की दृष्टि से ध्रुवस्वामिनी : एक समीक्षा"** विषय पर शैक्षणिक परियोजना कार्य प्रस्तुत की है, जो दूसरा परचे(HIN-HC-6026) के बदले में है। रूबीना खातून ने मनोयोग पूर्वक प्रस्तुत परियोजना कार्य की है; जिसका पूर्ण या आंशिक रूप कहीं भी प्रकाशित नहीं हुआ है। मैं प्रस्तुत लघु- परियोजना कार्य हेतु परीक्षक नियुक्त किए जाने की संस्तुति करता हूँ।

निर्देशक:

Associate Professor & HoD
Department Of Hindi
Kharupetia College.

Mausumi Saha Kalita
Digitally signed by Mausumi Saha Kalita
Date: 2024.06.26 21:07:26 +05'30'

सिकदार आनवारुल इसलाम
सहयोगी अध्यापक एवं विभागाध्यक्ष
हिन्दी विभाग, खारुपेटीया महाविद्यालय

भूमिका : जयशंकर प्रसाद जी ने हिन्दी काव्य में छायावाद की स्थापना की जिसके द्वारा खड़ीबोली के काव्य में कमनीय माधुर्य की रस सिद्ध धारा प्रवाहित हुई और वह काव्य की सिद्ध भाषा बन गई है। वे छायावाद के प्रतिष्ठापक ही नहीं अपितु छायावादी पद्धति पर सरस संगीतमय गीतों के लिखने वाले श्रेष्ठ कवि भी बने। नाटक लेखन में भारतेन्दु जी के बाद वे एक अलग धारा बहाने वाले युग प्रवर्तक नाटककार रहे जिनके नाटक आज भी पाठक न केवल चाव से पढ़ते हैं, बल्कि उनकी अर्थगर्भिता तथा रंगमंचीय प्रासंगिकता भी दिनानुदिन बढ़ती ही गयी है।

हिन्दी नाटक-साहित्य में प्रसाद जी का एक विशिष्ट स्थान है। इतिहास, पुराण-कथा और अर्द्धमिथकीय वस्तु के भीतर से प्रसाद ने राष्ट्रीय सुरक्षा के सवाल को पहली बार अपने नाटकों के माध्यम से उठाया। दरअसल उनके नाटक अतीत कथानिकों के द्वारा तत्कालीन राष्ट्रीय संकट को पहचानने और सुलझाने का मार्ग प्रशस्त करते हैं। 'ध्रुवस्वामिनी', 'चन्द्रगुप्त' और 'स्कन्दगुप्त' का सत्ता-संघर्ष राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रश्न से जुड़ा हुआ है। प्रसाद जी ने अपने नाटकों की रचना द्वारा भारतेन्दु कालीन रंगमंच से बेहतर और साहित्यिक रंगमंच की माँग उठायी। उन्होंने नाटकों की अन्तर्वस्तु के महत्व को रेखांकित करते हुए रंगमंच को लिखित नाटक का अनुवर्ती बताया। इस तरह नाटक

के पाठ्य होने के महत्व को उन्होंने नजर अन्दाज नहीं किया। नाट्य रचना और रंगकर्म के परस्पर सम्बन्ध के बारे भी उनका यह निजी दृष्टिकोण काफी महत्वपूर्ण और मौलिक है।

RUPETIA COLLEGE 1981 KHARUPETIA DARRANG

हर रचना रचनाकार के मौलिक चिन्तन की अभिव्यक्ति है। भोगे हुए यथार्थ का प्रभाव उस पर पडना सहज है। यह उसके बहुआयामी व्यक्तित्व का दस्तावेज भी है। मानव को सकरात्मक एवं सक्रिय बनाने में साहित्यकार का योगदान सराहनीय है। श्री जयशंकर प्रसाद जी ऐसा एक साहित्यकार है, जिन्होंने भारत के स्वर्णित अतीत के पुनःसृजन करने का प्रयत्न किया है। उनकी रचनाएँ इसके साक्षी है, प्रमाण है। हिन्दी साहित्य में एक विद्रोह के रूप में उभर कर सन्मुख आने वाले युग को "छायावाद" की संज्ञा दी गई और छायावाद की इस अनुपम अपूर्व एवं अद्भुत साहित्य धारा के प्रवर्तक का श्रेय मिला सरस्वती के विशिष्ट पुत्र महाकवि जयशंकर प्रसाद जी को। अतीत के झरोखों से वर्तमान की स्थितियों एवं समस्याओं को सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक डोर में पिरोकर स्वच्छ रूप से प्रतिष्ठित करने वाले प्रसाद निश्चित ही अलौकिक प्रतिभा के धनी व्यक्ति एवं साहित्यकार थे। काव्य, नाटक, उपन्यास, कहानी एवं निबन्ध आदि में एक साथ छायावादी की समस्त विभूति को स्वर देकर इस महाकवि ने साहित्याकाश में एक अन्यतम ध्वज फहराया।

2. प्रसाद जी का जीवन परिचय : छायावाद के प्रमुख स्तम्भ एवं राष्ट्रीय चेतना के अमर कवि जयशंकर प्रसाद का व्यक्तित्व एवं कृतित्व पूरे छायावादी युग पर छाया रहा। प्रसाद, पन्त और निराला को मिलाकर जो बृहत्त्रयी बनती है; इसमें जयशंकर प्रसाद को ब्रह्मा कहा जा सकता है। छायावादी युग के एकमात्र महाकाव्य 'कामायनी' के स्रष्टा के रूप में ही जयशंकर प्रसाद को याद नहीं किया जाता, बल्कि छायावाद युग की चेतना को गढ़ने वाले अमर कवि के रूप में भी इन्हें याद किया जाता है।

2.1. जन्म एवं वंश परिचय : महाकवि जयशंकर प्रसाद जी का जन्म माघ शुक्ल दशमी, संवत 1946 वि. (30 जनवरी 1890ई.) को काशी के गोवर्धन सराय में हुआ। इनके पिता बाबू देवी प्रसाद साहु जी दान देने के साथ-साथ कलाकारों में आदर करने के लिए विख्यात थे।

जब प्रसाद जी लगभग 11 वर्ष की अवस्था की थी तभी सन् 1900ई. में कार्तिक शुक्ल अष्टमी को उनके पिता का देहावसान हो गया। 15 वर्ष की अवस्था में सन् 1905 ई. में पौष कृष्ण सप्तमी को उनके माता श्रीमती मुन्नी देवी का देहावसान हो गया तथा 17 वर्ष

की अवस्था में 1907 में भाद्र कृष्ण षष्ठी को उनके बड़े भाई शंभुरत्न का देहावसान हो जाने के कारण किशोरावस्था में ही प्रसाद जी पर मानों आपदाओं का पहाड़ टूट पड़ा था। कच्ची गृहस्थी, घर में सहारे के रूप में केवल विधवा भाभी, दूसरी ओर कुटुम्ब कुटुंबियों तथा परिवार से संबद्ध अन्य लोगों का सम्पत्ति हड़पने का षड्यंत्र। इन सबका सामना उन्होंने धीरता और गंभीरता के साथ किया।

KHARUPETIA COLLEGE Estd - 1981 KHARUPETIA, DARRANG

2.2. बाल्यकाल एवं शिक्षा : देखा जाए तो जयशंकर प्रसाद जी का बाल्यकाल उतना कुशल नहीं गया। 11 वर्ष की उम्र में ही उनके पिता का देहावसान हो गया। 15 वर्ष की अवस्था में माता श्रीमती मुन्नी देवी का मृत्यु के साथ ही 17 वर्ष के उम्र में बड़े भाई का भी देहावसान हो गया और उसके साथ-साथ घर का सारा दायित्व प्रसाद जी के ऊपर आ पड़ते है।

प्रसाद जी की प्रारंभिक शिक्षा काशी में क्वींस कॉलेज में हुई थी, परन्तु यह शिक्षा अल्पकालिक थी। छठे दर्जे में वहाँ शिक्षा आरम्भ हुई थी और सातवें दर्जे तक ही वे वहा पढ़ पाये। उनकी शिक्षा का व्यापक प्रबन्ध घर पर ही किया गया, जहाँ हिन्दी और संस्कृत का अध्ययन इन्होंने किया। प्रसाद जी के प्रारम्भिक

KHARUPETIA COLLEGE Estd - 1981 KHARUPETIA, DARRANG

११ निष्कर्ष : इस समग्र विवेचन के बाद यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रसाद जी ने अपने जीवन-अनुभव, कल्पना तथा अध्ययन को काव्य के माध्यम से प्रस्तुत किया। कल्पना और अनुभूति, इतिहास एवं संस्कृति तथा प्रेम एवं सौन्दर्य के योग से उन्होंने जिन आदर्शों का निर्माण किया उनमें जीवन-दर्शन को सन्निहित करने का सफल प्रयत्न किया है। 'कामायनी' में वे मानव जाति के उत्थान और आनन्द-शिखर की यात्रा का महा वर्णन करते हैं। 'आँसू' में प्रसाद व्यक्तिः प्रेम भावना को एक व्यापक धरातल प्रदान कर विश्व की करुणा को अपनी वेदना में समाहित करते हैं तो लहर में बौद्ध-दर्शन से प्रभावित युग-चेतना को सफलतम अभिव्यक्ति देने वाले गीतों का सृजन करते हैं। जीवन को दृढ़ता से अपनी भावना में समन्वित कर अनेक समस्याओं का समाधान खोजने वाले इस महाकवि ने मानवता के कल्याण का पथ-प्रशस्त किया है। बौद्धिकता, भौतिकता तथा विज्ञानवाद की अति से त्रस्त मानवता में श्रद्धा, आस्था, विश्वास और सहृदयता का पावन भाव जाग्रत करने वाले इस सृजक ने भाव और कला दोनों ही दिशाओं में अपनी बहुमुखी

प्रतिभा के वरदान से उपकृत किया है। इस कालजयी महाकवि की देन भारतीय साहित्य के ही नहीं समग्र विश्व के लिए एक प्रेरणा बनती है। महाकवि प्रसाद जी छायावाद के प्रवर्तक ही नहीं विश्व साहित्य सृजक के पुण्य पथ को प्रशस्त करने वाले अप्रतिम, अद्वितीय तथा अलौकिक प्रतिभा के विश्व कवि बन जाते हैं।

KHARUPETIA COLLEGE * Estd - 1981 * KHARUPETIA, DARRANG

KHARUPETIA COLLEGE Estd - 1981 KHARUPETIA, DARRANG

सहायक ग्रंथ सूची

लेखक / सम्पादक	ग्रंथ	प्रकाशक
जयशंकर प्रसाद	इरावती	राजा पॉकेट बुक्स 330/1, मेन रोड, बुराड़ी दिल्ली-110084, सन् - 2012
जयशंकर प्रसाद	तितली	राजा पॉकेट बुक्स 330/1, मेन रोड, बुराड़ी दिल्ली-110084, सन् - 2012
डॉ. नगेन्द्र, डॉ. हरदयाल	हिन्दी साहित्य का इतिहास	मयूर बुक्स, 4226/1 अंसारी रोड़ दरिया गंज, नयी दिल्ली - 110002, सन् - 1973
बच्चन सिंह	हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास	राधाकृष्ण प्रकाशक प्राइवेट लिमिटेड 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली - 110002, सन् - 1996
श्री मनेश्वर कलिता	विशारद परीक्षा मॉडल प्रश्नोत्तर (तीसरा पर्चा)	किताप समलय, ए.आर. बी. रोड, पान बाजार, गुवाहाटी - 1
रामवीर शर्मा	आधुनिक काव्य संग्रह	विश्व विद्यालय प्रकाशन, वाराणसी - 2009,
विजयपाल सिंह	आधुनिक काव्य धारा	अनुराग प्रकाशन, वाराणसी, सन् - 2009

गौहाटी विश्वविद्यालय के अंतर्गत
बी.ए. 6th सेमिष्टर की अंतिम परीक्षा 2023,
मुख्य विषय- हिन्दी की दूसरा (HIN-HC-6026) परचा के लिए प्रस्तुत
शैक्षणिक परियोजना कार्य

विषय:-

नागार्जुन के कथा - साहित्य में ग्रामीण संस्कृति

निर्देशक :

सिकदार आनवारुल इसलाम
सहयोगी अध्यापक एवं विभागाध्यक्ष
हिन्दी विभाग, खारुपेटीया महाविद्यालय
जिला- दरंग (असम)

प्रस्तुतकर्ता:-

रूपसाना परवीन
बी.ए. 6th सेमिष्टर
मुख्य विषय:- हिन्दी
खारुपेटीया महाविद्यालय
रोल UA-201-248 नं- **0275**
पंजीयन नं : 20049544 सन: 2020-21

DEPARTMENT OF HINDI
ESDT-2081
Date:
Kharupetia College, Darrang (Assam)

KHARUPETIA COLLEGE
Estd - 1981
KHARUPETIA, DARRANG

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित करते हुए मुझे हर्ष होता है कि **रूपसाना परवीन** ,बी.ए. 6th सेमिष्टर , खारुपेटीया महाविद्यालय ने मेरे निर्देशन में **"नागार्जुन के कथा साहित्य में ग्रामीण संस्कृति "** विषय पर शैक्षणिक परियोजना कार्य प्रस्तुत की है, जो दूसरा (HIN-HC-6026) परचे के बदले में है। रूपसाना परवीन ने मनोयोग पूर्वक प्रस्तुत परियोजना कार्य की है; जिसका पूर्ण या आंशिक रूप कहीं भी प्रकाशित नहीं हुआ है। मैं प्रस्तुत लघु- परियोजना कार्य हेतु परीक्षक नियुक्त किए जाने की संस्तुति करता हूँ।

निर्देशक:

Associate Professor & HoD
Department Of Hindi
Kharupetia College.

सिकदार आनवारुल इसलाम
सहयोगी अध्यापक एवं विभागाध्यक्ष
हिन्दी विभाग, खारुपेटीया महाविद्यालय

Mausumi Saha Kalita
Digitally signed by Mausumi Saha Kalita
Date: 2024.06.26 21:07:59 +05'30'

PETIA COLLEGE
DARRANG

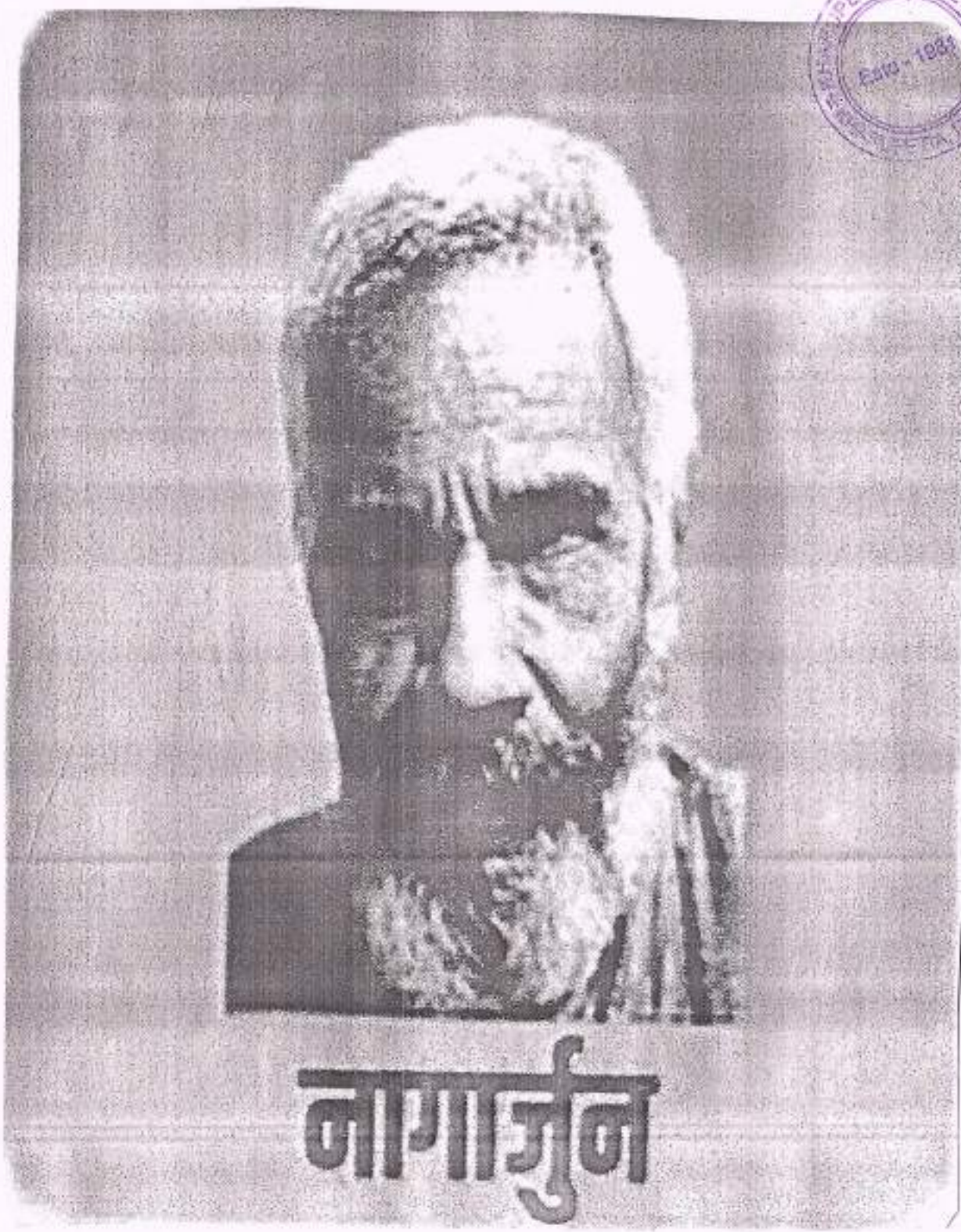

KHARUPETIA COLLEGE
Estd - 1981
KHARUPETIA DARRANG

(5)

आभार प्रकट

आज के आधुनिक समाज में नागार्जुन जैसा सच्चा कवि मिलना कठिन हैं जिसने जीवन में बिना किसी लाग-लपेट के सच कहने का साहसिक प्रयत्न किया । उनके समान हिन्दी साहित्य में कोई नहीं हैं, जिसमें जन-सामान्य के प्रति लगाव, प्रतिबध्दता और समाज में व्याप्त विसंगतियाँ एंव विडंबनाओं को ढंके की चोट पर कहने का साहस हो । यही साहस और हिम्मत मुझे नागार्जुन की कविता पढ़ने के लिए प्रेरित करती रही हैं । इन्हीं कारणों से नागार्जुन मेरे प्रिय कवि हैं ।

नागार्जुन का जन-सामान्य के प्रति लगाव हमें उनकी जन-प्रेम की और आकृष्ट करता हैं । प्रगतिशील कवियों ने जन-सामान्य पर कविताएँ लिखी हैं । लेकिन नागार्जुन की तरह जनता से सान्निध्य अन्यत्र नहीं मिलता हैं । वे जन और कवि के मध्य के अंतर को समाप्त कर देते हैं । इसीलिए वे जनकवि हैं । उनकी यही प्रतिभा हमें उनके समीप ले जाती हैं। कवि और कविता को जानने की उत्सुकता ने मुझे उनके काव्य-

- साहित्य पर विभिन्न विद्वानों और आलोचकों के लेख पढ़ने के लिए प्रेरित किया जिससे कालान्तर में नागार्जुन की कविता में प्रेम विषय पर काम करने का विचार आया। विभिन्न लेखों को पढ़ने के बाद हमें लगा कि नागार्जुन के प्रेम काव्य में विचार किया जा सकता हैं।

नागार्जुन का काव्य - ससांर व्यापक हैं। ऐसे में प्रेम कविताओं का चुनाव करना, सागर से मोती चुनने के समान था। क्योंकि नागार्जुन ने कई भाषाओं में कविताएँ लिखो हैं।

प्रस्तुत परियोजना कार्य में वैद्यानाथ मिश्र जी की समीक्षा प्रद्धति पर प्रकाश डाला गया था। यह परियोजना कार्य प्रस्तुत करने में गुवाहाटी विश्व विद्यालय ने सैमिस्टॉर के माध्यम से अनुमति प्रदान किया हैं, जिनके प्रति मैं आभार प्रकट करना हूँ। इस परियोजना कार्य का चुनाव अपनी रूची तथा निर्देशक श्रद्धापरक सिकदार आनवारूल इसलाम अध्यापक, हिन्दी विभाग, खारूपेटीया कॉलेज" महोदय के परामर्श एंव सही निदर्शन तथा विचार-विर्म्श के साथ किया गया।

इस परियोजना कार्य प्रस्तुत करने में परम श्रद्धापरक निर्देशक सिकदार आनवारूल इसलाम महोदय के सहृदयता पूर्ण परामर्श तथा परितिष्ठ निर्देशन के लिए मैं उनके प्रति चिर आभारी रहूँगा ।

इस परियोजना को प्रस्तुत करने में अध्यापिका रिंकु मणि बेगम तथा मेरी सहपाठी रूबिना खातुन ने सहाहृयता की । इस सहायता के लिए मैं आभारी रहूँगा । विभिन्न दिशाओं में सहायता एवं परामर्श देने के लिए परम- पुजनीय- महम्मद अब्दुल मतिन महोदय और मुस्ताफा नुरुज जामान महोदय जी के प्रति हार्दिक श्रद्धा ज्ञापन करता हूँ । विभिन्न दिशाओं में सहायता एवं परामर्श प्रदान करने हेतु परिवार वर्ग तथा संहपाठी के साथ अन्यय बन्धुवर्ग के प्रति भी आन्तरिक धन्यवाद ज्ञापक करता हूँ ।

विभिन्न दिशा तथा कार्यों में हमारे खारुपेटिया महाविद्यालय के अनेक प्रिय साथी तथा अपने श्रेणी के उच्चात्तर - निम्न श्रेणी के कुछ सहपाठियो के सहायता प्रदान करने हेतु और आंतरिकता पूर्ण मनोभाव के कारण

KHARUPETIA COLLEGE * KHARUPETIA, DARRANG * Estd - 1981

ही मैं यह कार्य करने में सफलता प्राप्त करनी चाहती हूँ। मेरे अपने बन्धु वर्ग सहपाठी, आपने परिवार सभी को मैं अपने तरफ से स्नैह भरा हृदय से आन्तरिक श्रद्धा तथा सहानुभूति मनोदशा व्यक्त करना हूँ और सभी को मेरी तरफ से हार्दिक श्रद्धा ज्ञापन करता हूँ।

KHARUPETIA COLLEGE Estd - 1981 KHARUPETIA, DARRANG

रूपसाना पारबीन

विषयानु क्रमणिका

KHARUPETIA COLLEGE * Estd - 1981 * KHARUPETIA DARRANG

विषय वस्तु	पृष्ठा नं
1. भूमिका	1-2
2. जन्म एंव वंश परिचय	3-8
2.1. बाल्यकाल एंव शिक्षा	
2.2. वैवाहिक तथा सांसारिक जीवन	
3. व्यक्तित्व एंव कृतित्व	9-22
3.1. रचनाएँ	
3.2. पद्य साहित्य	
3.3. गद्य साहित्य	
3.4. उपन्यास	
3.5. कहानियाँ	
3.6. निबंध	
3.7. नाटक	
4. नागार्जुन के कथा-साहित्य में ग्रामीण संस्कृति	23-40
4.1. नागार्जुन के उपन्यास और ग्रामीण संस्कृति	
4.2. नागार्जुन के कहानियाँ एंव ग्रामीण संस्कृति	

KHARUPETIA COLLEGE
Estd - 1981
KHARUPETIA, DARRANG

(1) भूमिका :

नागार्जुन छायावादोत्तर दौर के ऐसे अकेले कवि हुए, जिनकी कविता गाँव की चौपालों और साहित्यिक दुनिया में समान रूप से लेखन करने वाले नागार्जुन ने बांग्ला और संस्कृत में भी कविताएँ लिखीं। मातृभाषा मैथिली में वे 'यात्री' नाम से प्रतिष्ठित हुए। लोकजीवन, स्वार्थ और समाज की पतनशील स्थितियों के प्रति अपने साहि-त्य में विशेष सजग रहे। वे व्यंग्य में माहिर हैं। इसलिए उन्हें आधुनिक कबीर भी कहा जाता हैं।

नागार्जुन को प्रगतिशील काव्यधारा का आधार कवि माना जाता हैं। नागार्जुन ने जीवन को उसके विविध रूपों में जटिल संघर्षों को, राजनीतिक विकृतियों को, मजदूर आंदोलनों को, किसान-जीवन के सामान्य दुख-सुख को पहचा-नने और अभिव्यक्त करने का बृहत्तर सर्जनात्मक उत्तरदायित्व अपने कंधों पर उठाया हैं। जिस प्रकार उनकी काव्य संरचना और कथ्य के स्तर पर वैविध्य है, वैसा ही वैविध्यमय उनका जीवन भी हैं। नागार्जुन की बात करते हैं उनकी कविताएँ

'अकाल और उसके बाद', 'बादल को घिरते देखा है' तथा 'कालिदास सच सच बतलाना' हठात ध्यान में आ जाती हैं। लेकिन इन तीनों कविताओं की विषयवस्तु अलग-अलग हैं, इसका शिल्प भी एक दूसरे से भिन्न-भिन्न रूपों के माध्यम से हम उनके काव्य का अध्ययन इस इकाई में करेंगे। किसी भी वस्तु, भाव और ~~भिन्न भिन्न रूपों के माध्यम से हम उनके~~ स्थिति के हृदय पर पड़े प्रभाव की प्रतिक्रिया ही संवेदना * कहलाती हैं। नागार्जुन का काव्य संसार वैविध्यमय होने के ~~साथ~~-साथ बहुत व्यापक एवं विराट हैं। इसमें प्रकृति, मनुष्य, पशु, राजनीतिक-सामाजिक जीवन, जीवन के मधुर एवं कोमल पक्ष, व्यंग्य की तीखी धार दैनन्दिन जीवन की गतिविधियाँ सब शामिल हैं। नागार्जुन का यह वैविध्यमय संसार उनकी काव्य संवेदना का किस प्रकार हिस्सा बनता हैं, आइये इसे देखें।

2. जन्म एवं वंश परिचय :- नागार्जुन का जन्म 1911 ई० की ज्येष्ठ पूर्णिमा को वर्तमान मधुबनी जिले के सतलखा में हुआ था। यह उन का ननिहाल था। उनका पैतृक गाँव वर्तमान दरभंगा जिले का तरौनी था। इनके पिता का नाम गोकुल मिश्र और माता का नाम उमा देवी था। नागार्जुन का मूल नाम वैद्यनाथ मिश्र हैं। नागार्जुन उनका उपनाम हैं. इसके अलवा बचपन का नाम 'ठक्कन मिसर' था। गौकुल मिश्र अति निराशापूर्ण जीवन में रह रहे थे। अशिक्षित ब्राह्मण गौकुल मिश्र ईश्वर के प्रति आस्थावान तो स्वाभाविक रूप से थे ही पर उन दिनों अपने आराध्य देव शंकर भगवान की पूजा ज्यादा ही करने लगे थे। वैद्यनाथ धाम (देवघर) जाकर बाबा वैद्यनाथ की उन्होंने यथाशक्ति उपासना की और वहाँ से लौटने के बाद घर में पूजा-पाठ में भी समय लगाने लगे। "फिर जो पाँचवीं सन्तान हुई तो मन में यह आशंका भी पनपी कि चार संतानों की तरह यह भी कुछ समय में ठगकर चल बसेगा। अतः इसे 'ठक्कन' कहा जाने लगा। काफी दिनों के बाद इस ठक्कन का नामकरण हुआ और

KHARUPETIA COLLEGE * Estd. 1981 * KHARUPETIA, DARRANG

12. निष्कर्ष :-

संक्षेप में कहा जा सकता है कि बाबा नागार्जुन एक प्रगतिवादी लेखक है। समाज में चारों ओर व्याप्त विकृतियों को देखा। ~~समाज~~ में उसी की अपनी रचनाओं में स्थान दिया। नागार्जुन ने शोषित, पीड़ित ग्रामीण संस्कृति के जन सामान्य के प्रति सहानुभूति प्रकट की। उनके उपन्यासों में कहानियों में आम जनता का दुःख दर्द चित्रित हुआ है। नागार्जुन के कृतित्व-व्यक्तित्व के अन्तर्गत उनके उपन्यासों का ऐसा चित्रण सामने आता है जो पाठक को जनजीवन के अत्यन्त निकट ले जाता है। नागार्जुन ग्रामीण अंचल की कुरीतियां, अंधविश्वास, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक समस्याओं का यथार्थ रूप अपने कथा-साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत करते है। वे सामान्य जन तथा पाठक को इन समस्याओं से अवगत कराते है। ग्रामीण परिवेश में कोई पनपे बाबा नागार्जुन सर्वहारा के पक्षधर थे। अकाल की पीड़ा, मंहगाई, भ्रष्टाचार, परिवेशगत कोई भी स्थिति या यथार्थ किसी ने किसी रूप से उनके साहित्य में उभरा। ग्रामांचलों की उनकी सभी विशेषताओं के साथ साहित्य में स्थान प्राप्त हुआ है। नागार्जुन के उपन्यास तथा कहानियाँ ग्रामीर्ण अंचल

के मानव- अनुभवों एवं सत्य का आकलन करते थे। नागार्जुन स्वयं ग्रामीण अचंल से थे, इसलिये उनके कथा-साहित्य में ग्रामांचलों का यथार्थ रूप चित्रित हुआ है। सभी समस्याओं का यथार्थ रूप चित्रित हुआ है। सभी समस्याओं का यथार्थ रूप प्रस्तुत करना नागार्जुन के लेखक कार्य की प्रमुख विशेषता है। वे न शासन से डरते थे न शोषक से। स्त्री समस्याओं का भी नागार्जुन ने यथार्थवादी चित्रण किया है। लोक संस्कृति का रूपायन नागार्जुन ने विशेष रूप किया हैं। उनके लेखन कार्यों में ग्रामीण अंचल के लोग ही विषय केन्द्र रहे, चाहें वे ग्रामीण कृषक हो या मजदूर, सभी के प्रति नागार्जुन ने सहानुभूति प्रकट की। उन्होन गाँव के निम्न वर्गीय पात्रों को अपने उपन्यासों एंव कहानियों का विषय बनाया। उन्होंने न केवल सामाजिक समस्याओं को चित्रित किया। बल्कि उसका समाधान भी प्रस्तुत किया।

गौहाटी विश्वविद्यालय के अंतर्गत

बी.ए. 6th सेमिष्टर की अंतिम परीक्षा 2023,

मुख्य विषय- हिन्दी की दूसरा(HIN-HC-6026) परचा के लिए प्रस्तुत

शैक्षणिक परियोजना कार्य

विषय:-

प्रेमचंद के उपन्यास गोदान में नारी चरित्र

निर्देशक :

सिकदार आनवारुल इसलाम

सहयोगी अध्यापक एवं विभागाध्यक्ष

हिन्दी विभाग, खारुपेटीया महाविद्यालय

जिला- दरंग (असम)

प्रस्तुतकर्ता:-

तसलीमा परवीन

बी.ए. 6th सेमिष्टर

मुख्य विषय:- हिन्दी

खारुपेटीया महाविद्यालय

रोल UA-201-248 नं- **0337**

पंजीयन नं : 20049607 सन: 2020-21

ESDT-2081
Date

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित करते हुए मुझे हर्ष होता है कि **तसलीमा परवीन** ,बी.ए. 6th सेमिष्टर , खारुपेटीया महाविद्यालय ने मेरे निर्देशन में **"प्रेमचंद के उपन्यास गोदान में नारी चरित्र "** विषय पर शैक्षणिक परियोजना कार्य प्रस्तुत की है, जो दूसरा(HIN-HC-6026) परचे के बदले में है। तसलीमा परवीन ने मनोयोग पूर्वक प्रस्तुत परियोजना कार्य की है; जिसका पूर्ण या आंशिक रूप कहीं भी प्रकाशित नहीं हुआ है। मैं प्रस्तुत लघु- परियोजना कार्य हेतु परीक्षक नियुक्त किए जाने की संस्तुति करता हूँ।

Mausumi Saha Kalita

Digitally signed by Mausumi Saha Kalita
Date: 2024.06.26 21:08:36 +05'30'

निर्देशक:

Associate Professor & HoD
Department Of Hindi
Kharupetia College.

सिकदार आनवारुल इसलाम
सहयोगी अध्यापक एवं विभागाध्यक्ष
हिन्दी विभाग, खारुपेटीया महाविद्यालय

विषयानुक्रमणिका

KHARUPETIA COLLEGE Estd - 1981 KHARUPETIA, DARRANG

विषय वस्तु	पृष्ठ नं.
1) भूमिका	1-3
2. परिचय	3
2.1. जन्म एवं वंश परिचय	3-4
2.2. बाल्यकाल एवं शिक्षा	4-5
2.3 वैवाहिक तथा पारिवारिक जीवन	5-6
3. व्यक्तित्व	7-9
4. साहित्यिक रचनाएँ एवं कृतित्व	9-11
5. प्रेमचन्द के उपन्यास गोदान में नारी-चरित्र	12-14
5.1. नारी जीवन के प्रति प्रेमचन्द का दृष्टिकोण	14-18
5.2. चरित्र-चित्रण की विधि और नारी चित्रण	18-26
5.3. गोदान में प्रस्तुत किसान नारी पात्र	26-30
5.4. गोदान में चित्रित मध्यवर्गीय नारी पात्र	30-35
5.5 जाति व्यवस्था और दलित नारी का उत्पीड़न	35-39
5.6. प्रेमचन्द की दृष्टि में नारीत्व की अवधारणा	39-41
6. ग्रन्थ	42
7. निष्कर्ष	42-43

KHARUPETIA COLLEGE Estd DARRANG

१. भूमिका: हिन्दी उपन्यास जगत में प्रेमचन्द जी को अत्यन्त गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है। उन्होंने अपनी रचनाओं में जहाँ एक ओर समाज में व्याप्त कुरीतियों एवं विषमताओं पर करारा प्रहार किया है; वहीं दूसरी ओर भारतीय जन-जीवन की अस्मिता की खोज भी की है। निःसन्देह, प्रेमचन्द एक ऐसे आदर्शोन्मुखी यथार्थवादी साहित्यकार हैं, जिनकी प्रत्येक रचना भारतीय जन-जीवन का आईना है तथा हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि।

प्रेमचन्द जी ने हिन्दी को पाला-पोसा, बड़ा किया और उसे एक संस्कार दिया। प्रेमचन्द ने कहानी और उपन्यास की एक ऐसी परम्परा का विकास किया जिसने एक पूरी सदी के साहित्य का मार्गदर्शन किया। अपने बाद की एक पूरी पीढ़ी को गहराई तक प्रभावित कर प्रेमचन्द ने साहित्य को आम आदमी और जमीन से जोड़ा। उनका लेखन हिन्दी साहित्य की एक ऐसी विरासत है, जिसके बिना हिन्दी के विकास का अध्ययन अधूरा होगा।

उपन्यास के सम्राट प्रेमचन्द का कहना था कि 'साहित्यकार देशभक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई नहीं बल्कि उसके आगे मशाल दिखाती हुई चलने वाली सच्चाई है'। यह बात उनके साहित्य में उजागर की हुई है। प्रेमचन्द ने साहित्य को सच्चाई के धरातल पर उतारा। उन्होंने जीवन और कालखंड की सच्चाई को पन्ने पर उतारा।

वे साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार, जमींदारी, कर्जखोरी, गरीबी, उपनिवेशवाद पर आजीवन लिखते रहे। प्रेमचन्द की ज्यादातर रचनाएँ गरीबी और दैन्यता की कहानी कहती है। यह भी गलत नहीं है कि वह आम भारतीय के रचनाकार थे। उनकी रचनाओं में ऐसे नायक हुए, जिसे भारतीय समाज अछूत और घृणित समझता था। उन्होंने सरल, सहज और आम बोल-चाल की भाषा का उपयोग किया और अपने प्रगतिशील विचारों को दृढ़ता से तर्क देते हुए समाज के सामने प्रस्तुत किया। 1936 में प्रगतिशील

6. मृत्यु : प्रेमचन्द ने अध्यापक कार्य छोड़ने के बाद 18 मार्च 1921 को वह बनारस चले आए। यहाँ उन्होंने सिर्फ साहित्य कार्य पर ध्यान दिया। जॉब छोड़ने के बाद उनकी आर्थिक स्थिति भी खराब होने लग गई। उन्होंने भारत के आर्थिक असहयोग आन्दोलन में साथ देने के लिए महात्मा गांधी जी के कहने पर ब्रिटिश सरकार की जॉब छोड़ दी। 8 अक्तुबर 1936 को मुंशी प्रेमचन्द की बनारस में मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु के बाद उनकी पत्नी ने भी उन पर एक पुस्तक लिखी जिसका नाम था - "प्रेमचन्द घर में।"

7. निष्कर्ष : मुंशी प्रेमचन्द ने हिन्दी साहित्य को अमूल्य गुण दिए हैं। उन्होंने जीवन और कालखंड की सच्चाई को धरातल पर उतारा था। उन्होंने आम बोल-चाल की भाषा का प्रयोग किया था। उन्होंने हिन्दी हिन्दी साहित्य को नई दिशा प्रदान की थी, वह एक महान लेखक थे और हिन्दी साहित्य के युग प्रवर्तक भी थे।

KHARUPETIA COLLEGE 1961

KHARUPETIA COLLEGE 1981 KHARUPETIA, DARRANG

मुंशी प्रेम चन्द एक सफल लेखक, देशभक्त नागरिक, कुशल वक्ता, जिम्मेदार सम्पादक और संवेदनशील रचनाकार थे। उनका लम्बी बीमारी के बाद 8 अक्टुबर 1936 को निधन हो गया। भारत के लिए यह बहुत दुख की बात हैं कि हिंदी भाषा का यह महान कवि, कहानीकार उम्र भर आर्थिक समस्याओं से जुझता रहा। सारी उम्र परिश्रम करने के कारण इनका स्वास्थ्य धीरे-धीरे गिरने लगा था। इनका साहित्य भारत समाज में जीवन का दर्पण माना जाता है।

गौहाटी विश्वविद्यालय के अंतर्गत

बी.ए. 6th सेमिष्टर की अंतिम परीक्षा 2023,

मुख्य विषय- हिन्दी की दूसरा(HIN-HC-6026) परचा के लिए

प्रस्तुत शैक्षणिक परियोजना कार्य

विषय:-

महादेवी वर्मा की प्रमुख कहानियों की समीक्षा

निर्देशक :

सिकदार आनवारुल इसलाम

सहयोगी अध्यापक एवं विभागाध्यक्ष

हिन्दी विभाग, खारुपेटीया महाविद्यालय

जिला- दरंग (असम)

प्रस्तुतकर्ता:-

जर्जिना बेगम

बी.ए. 6th सेमिष्टर

मुख्य विषय:- हिन्दी

खारुपेटीया महाविद्यालय

रोल UA-201-248 नं- **0127**

पंजीयन नं : 20049394 सन: 2020-21

DEPARTMENT OF HINDI
ESDT-2081
Date:
Kharupetia College, Darrang (Assam)

KHARUPETIA COLLEGE
Estd - 1981
KHARUPETIA, DARRANG

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित करते हुए मुझे हर्ष होता है कि **जर्जिना बेगम** ,बी.ए. 6th सेमिष्टर , खारुपेटीया महाविद्यालय ने मेरे निर्देशन में **"महादेवी वर्मा की प्रमुख कहानियों की समीक्षा "** विषय पर शैक्षणिक परियोजना कार्य प्रस्तुत की है, जो दूसरा(HIN-HC-6026) परचे के बदले में है। **जर्जिना बेगम** ने मनोयोग पूर्वक प्रस्तुत परियोजना कार्य की है; जिसका पूर्ण या आंशिक रूपकहीं भी प्रकाशित नहीं हुआ है। मैं प्रस्तुत लघु- परियोजना कार्य हेतु परीक्षक नियुक्त किए जाने की संस्तुति करता हूँ।

Mausumi Saha Kalita
Digitally signed by Mausumi Saha Kalita
Date: 2024.06.26 21:09:13 +05'30'

निर्देशक:

Associate Professor & HoD
Department Of Hindi
Kharupetia College.

सिकंदार आनवारुल इसलाम
सहयोगी अध्यापक एवं विभागाध्यक्ष
हिन्दी विभाग, खारुपेटीया महाविद्यालय

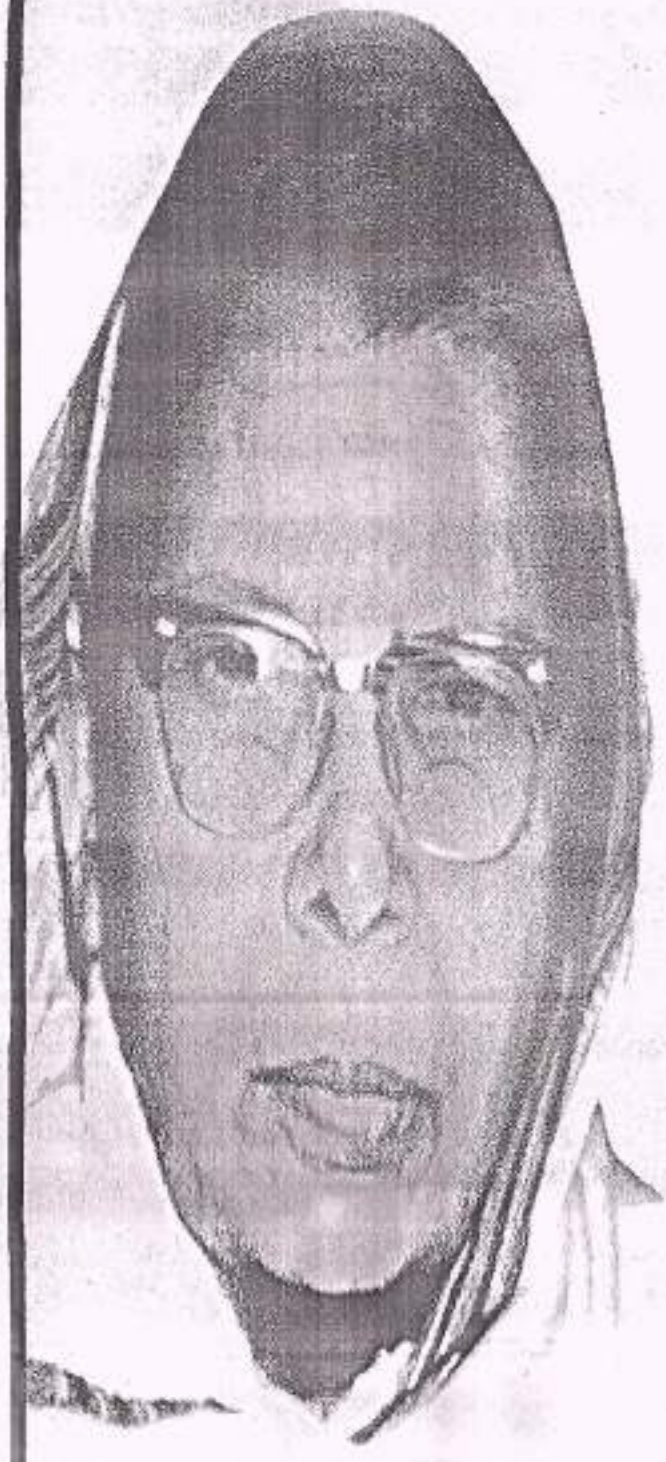

COLLEGE
Estd - 1981
KHARUPETIA, DARRANG

महादेवी वर्मा

26 मार्च 1907 - 11 सितंबर 1987

आभार प्रकट

KHARUPETIA COLLEGE
Estd - 1981
MANGALDAI, DARRANG

महादेवी वर्मा आधुनिक तथा छायावादयुगीन कवियित्री में से एक है। वे हिन्दी साहित्य के चार स्तम्भों में से एक है। आधुनिक हिन्दी की सबसे सशक्त कवियत्री होने के कारण उन्हें आधुनिक 'मीरा' के नाम से जाना जाता है। उनकी गिनती हिन्दी कविता के छायावादी युग के कवियों के साथ की जाती है। महादेवी वर्मा वेदना के गीतकार है, जिसकी अभिव्यक्ति छायावादी शैली में प्रकृति के माध्यम से हुई है। वर्मा जी की कविता से प्रकृति प्रेममूलक भावना, नारी जीवन की चरित्र चित्रण, मानव संघर्ष, विरह भाव, वेदनामूलक परिस्थिति के बारे में पता चलता है, साथ ही स्वतंत्रतामूलक मनोभाव भी जाग्रीत होता है। वे स्वतंत्रता संग्राम और नारियों के न्याय प्रकल्प के लिए कार्य करने और साहित्य जगत में काम लिखना शुरु किया। यही कारणों से मुझे महादेवी वर्मा की कहानियाँ पढ़ने के लिए प्रेरित करती है। और इसी कारण महादेवी वर्मा मेरे प्रिय लेखिका, कवियत्री है।

महादेवी वर्मा की साहित्य प्रेम भावना,

P.T.O

करने में अध्यापिका रिंकुमणि बेगम तथा मेरी सहपाठी रुबिना खातुन और रुपधाना पारबिन ने सहायता की है। इस सहायता के लिए मैं आभारी रहूँगा। विभिन्न विषयों में सहायता एवं परामर्श देने के लिए परम पूजनीय- मुहम्मद अब्दुल मसिन महोदय और मुस्तफा नुरुज जामान महोदय जी को मेरे हार्दिक श्रद्धा ज्ञापन करता हूँ। विभिन्न विषयों में सहायता एवं परामर्श प्रदान करने हेतु परिवार को तथा सहपाठी के साथ अन्यान्य बंधुओं के प्रति भी आंतरिक धन्यवाद ज्ञापन करता हूँ।

KHARUPETIA COLLEGE 1967 KHARUPETIA, DARRANG

विभिन्न कार्यों में हमारे खारुपेटिया महाविद्यालय के अनेक प्रिय साथी तथा अपनी श्रेणी के उच्चतर-निम्न श्रेणी के कुछ सहपाठियों के सहायता प्रदान करते हुए और आंतरिकता पूर्ण मनोभाव के कारण ही मैं यह कार्य करने में सफलता प्राप्त करने चाहती हूँ। मैं अपने बंधुओं, सहपाठी, अपने परिवार सभी को मैं अपने तरफ से स्नेह भरा हृदय से श्रद्धा का मनोभाव अर्पण करता हूँ और सभी को मेरी तरफ से हार्दिक श्रद्धा ज्ञापन करता हूँ।

(जाकिना बेगम) P.T.O

विषय सूची

KHARUPETIA COLLEGE * Estd - 1981 * KHARUPETIA, DARRANG *

विषय वस्तु	पृष्ठ नं०
भूमिका	1-2
1) महादेवी वर्मा का जीवन परिचय	3-7
1.1) शैक्षिक जीवन	
1.2) वैवाहिक जीवन	
1.3) पारिवारिक परिवेश	
2) साहित्य	8-12
2.1) साहित्य में स्थान	
2.2) स्वतंत्रता संग्राम में भूमिका	
3) कृतियाँ एवं रचनाएँ	13-16
3.1) कहानी	
3.2) उपन्यास	
3.3) कविता	
3.4) रेखाचित्र	
3.5) निबंध	
3.6) आलोचना निबंध	
3.7) भाषण संग्रह	
3.8) गीत संकलन	
3.9) संस्मरण	

P.T.O

KHARUPETIA COLLEGE Estd - 1981 KHARUPETIA, DARRANG

भूमिका :–

छायावाद के विशिष्ट कवियों में महादेवी वर्मा भी एक है। उनका जन्म उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद के एक मुसम्पन्न परिवार में हुआ था। इनके पिता श्री गोविन्द प्रसाद वर्मा जो भागलपुर में प्रधान अध्यापक थे और माता श्रीमती हेमरानी देवी थी. वे विदुषी और धार्मिक स्वभाव की महिला थी।

जब भी हिन्दी साहित्य का नाम आता है तो महादेवी वर्मा का नाम महान लेखकों में गिना जाता है और उन्होंने सिर्फ अपने कलम के दम पर ही हिन्दी साहित्य में एक नई क्रांति ला दी थी क्योंकि उन्होंने हिन्दी साहित्य के अंदर निहार, रश्मि, नीरजा, दीपशिखा जैसी कई बड़ी रचनाएं लिखी थी।

महादेवी वर्मा को आधुनिक युग की मीरा भी कहा जाता है। भक्तिकाल में जो स्थान मीरा को प्राप्त हुआ था वो स्थान आधुनिक काल में महादेवी वर्मा को प्राप्त हुआ। महादेवी का प्रियतम असीम निर्गुण निराकार (ब्रह्म) है और वे उसके प्रति समर्पित है। वर्मा जी के गीत में नीर भरी दुख, जैसा इसका परिचायक है। उनका जीवन मीरा की जैसा ही है। उनके काव्य में निजी अनुभूति अभिव्यक्त हुई है। उनका काव्य जीवन काल में आनेवाले विविध

P.T.O

KHARUPETIA COLLEGE * KHARUPETIA, DARRANG * Estd - 1981

पशुओं के समान है। उनकी काव्यार्थ प्राय सरल-सरल मानवीय भावनाओं और आकर्षित मनोभाव को अभिव्यक्त करती है। उनकी गीतों में प्रभावित करुणा के अनंत स्रोत कोण से समझा जा सकता है। करुणा और वेदना वर्मा के गीतों की मुख्य प्रवृत्ति है। असीम दुःखमय भाव के साथ उनके गीत आरंभ तथा अंत होते हैं।

महादेवी वर्मा कविता के साथ-साथ गद्य को भी समीक्षकों को सराहना मिली। वह चित्रकला में भी निपुण थे। उनके अंदर काव्य रचना के प्रतिभा बचपन से फूटने लगी थी। उन्होंने गद्य, काव्य, शिक्षा और चित्रकला सभी क्षेत्रों में नए आयाम स्थापित किये।

महादेवी वर्मा की कविताए सर्वव्यापी परम सत्ता के प्रति सहानुभूति, विदानुभूति की तीव्रता परिलक्षित होती है। उन्होंने काव्य को आराध्य की विरहानुभूति और अविकार पूर्णतः वेदना की अभिव्यक्ति में सीमित न रहकर उसे लोक कल्याणकारी करुणा भाव से जोड़ दिया है। अपने प्रियतम अज्ञात सत्ता के प्रति तीव्र रहस्यानुभूति के कारण वो रहस्यवादी कवयित्री के रूप में भी प्रसिद्ध है। इन्ही गुणों के कारण उनकी काव्य-रचनाएँ हिन्दी पाठकों को विशेष प्रिय रही है।

P.T.O

KHARUPETIA COLLEGE
Estd - 1981
KHARUPETIA, DARRANG

1) महादेवी वर्मा का जीवन परिचय :-

महादेवी वर्मा का जन्म 1907 के 26 मार्च को होली के दिन उत्तरप्रदेश के फरूखाबाद एक सुसंस्कृत परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम श्री गोविंद प्रसाद वर्मा और माता श्रीमती हेमरानी देवी, उनके माता पिता दोनों ही शिक्षाप्रेमी थे। महादेवी के वंश में कई पीढ़ीयों तक लड़की का जन्म नहीं हुआ था, और अपनी माता को भी कोई कन्या न होने के कारण वे मंदिर में जाके अनेक मानसिक के बाद ही वर्मा का जन्म हुआ था, इसी कारण उनके घरों में उसे लक्ष्मी माना जाता है और वर्मा जी को अनेक आदर-प्यार से बड़ा किया है। महादेवी वर्मा अपने माता पिता के लाड़-प्यार के बेटी थी। (पुस्तक-आलोक भाग(1) पृष्ठ 121, लेखक-अच्युत शर्मा) महादेवी वर्मा के माता-पिता दोनों उदार विचार-वाले व्यक्ति थे। उनकी जीवन सुखमय तथा सौन्दर्यमय बनाने के उनके माता-पिता असीम सहायता किया है। वर्मा जी खुद ही अपने जीवन को अनेक सुखमय तथा कुशलमय बनाने के कारण बहुत खुश नजर आती थी और वो अपने किसी काव्य-ग्रंथ में अपने परिवार के बारे में पहले लिखा करते थे। महादेवी वर्मा के उम्र की लड़कियों को अपने

KHARUPETIA COLLEGE
Estd - 1981
KHARUPETIA, DARRANG

सहायक ग्रंथों सूची

लेखक/लेखिका के नाम	ग्रंथों के नाम	प्रकाशक
1. डॉ. अच्युत शर्मा, सुरेन सिंह, मंगल शर्मा, रामनाथ प्रसाद	आलोक भाग (1)	असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति गुवाहाटी, (2011)
2. डॉ. अच्युत शर्मा, रामनाथ प्रसाद, गोलोक चन्द्र डेका	आलोक भाग (2)	असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति गुवाहाटी, (2012)
3. रघुनाथ कुमार, कविता बरुवा	आओ हिन्दी सीखें	असम जातीय विद्यालय नुनमाटि गुवाहाटी, (2017)
4. श्री मनेश्वर कलिता	विशारद परीक्षा सहायिका (पहला पर्चा)	किताब सम्भार ए. आर. बी रोड, पानबाजार गुवाहाटी (2018)
5. श्री मनेश्वर कलिता, श्री मदन प्रसाद गुप्त	विशारद परीक्षा सहायिका (दूसरा पर्चा)	किताब सम्भार आनन्दराम बरुवा रोड, पानबाजार गुवाहाटी, (2018)
6. श्री मनेश्वर कलिता, मदन मोहन झा, कुशल शर्मा	प्रवीण परीक्षा सहायिका (दूसरा पर्चा)	किताब सम्भार आनन्दराम बरुवा रोड, पानबाजार गुवाहाटी (2018)
7. डॉ. नगेन्द्र कुमार, डॉ. हरदयाल प्रसाद, श्री कमलेश जैन	राष्ट्रभाषा रत्न सहायिका प्रथम पत्र (1)	हिन्दी पुस्तक घर कोर्ट रोड, उमरेठ, आनंद गुजरात राज्य, (2019)
8. डॉ विजयपाल सिंह	आधुनिक काव्यधारा	अनुराग प्रकाशन वाराणसी (2019)
9. डॉ सत्यजित कलिता	आधुनिक हिन्दी काव्यधारा	असम बुक ट्रस्ट (2019)

P.T.O

गौहाटी विश्वविद्यालय के अंतर्गत
बी.ए. 6th सेमिष्टर की अंतिम परीक्षा 2023,
मुख्य विषय- हिन्दी की दूसरा(HIN-HC-6026 परचा के लिए प्रस्तुत
शैक्षणिक परियोजना कार्य

विषय:-

रामधारी सिंह दिनकर की प्रमुख कहानियों की समीक्षा

निर्देशक :

सिकदार आनवारुल इसलाम
सहयोगी अध्यापक एवं विभागाध्यक्ष
हिन्दी विभाग, खारुपेटीया महाविद्यालय
जिला- दरंग (असम)

प्रस्तुतकर्ता:-

ममताज़ बेगम
बी.ए. 6th सेमिष्टर
मुख्य विषय:- हिन्दी
खारुपेटीया महाविद्यालय
रोल UA-201-248 नं- **0165**
पंजीयन नं : 20049432 सन: 2020-21

ESDT-2081
Date:

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित करते हुए मुझे हर्ष होता है कि **ममताज़ बेगम**,बी.ए. 6th सेमिष्टर , खारुपेटीया महाविद्यालय ने मेरे निर्देशन में **"रामधारी सिंह दिनकर की प्रमुख कहानियों की समीक्षा "** विषय पर शैक्षणिक परियोजना कार्य प्रस्तुत की है, जो दूसरा(HIN-HC-6026) परचे के बदले में है। **ममताज़** बेगम ने मनोयोग पूर्वक प्रस्तुत परियोजना कार्य की है; जिसका पूर्ण या आंशिक रूप कहीं भी प्रकाशित नहीं हुआ है। मैं प्रस्तुत लघु-परियोजना कार्य हेतु परीक्षक नियुक्त किए जाने की संस्तुति करता हूँ।

निर्देशक:

Mausumi Saha Kalita

Digitally signed by Mausumi Saha Kalita
Date: 2024.06.26 21:09:47 +05'30'

Associate Professor & HoD
Department Of Hindi
Kharupetia College

सिकदार आनवारुल इसलाम
सहयोगी अध्यापक एवं विभागाध्यक्ष
हिन्दी विभाग, खारुपेटीया महाविद्यालय

KHARUPETIA COLLEGE
Estd - 1981
KHARUPETIA, DARRANG

आभार प्रकट

किसी भी कार्य करने के लिए हमें लक्ष्य एक होना चाहिए। क्योंकि बिना लक्ष्य को कोई कार्य सम्पूर्ण नहि होता है। एक लक्ष्य पर ध्यान देकर कोई भी कार्य किया जा सकता है। और उस कार्य को पुरा करने के लिए एक निर्देशक की तथा सहयोगी की आवश्यकता होती है।

जैसे की मैंने उल्लेख किया है कि किसी भी कार्य करने के लिए निर्देशक है। और मैं इस परियोजना कार्य को पुरा करने के लिए अपनी महाविद्यालय के अपनी हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष सिकदार आनवारुल इसलाम गुरुजी तथा अपनी सहपाठि तथा अपनी माता पिता के सहयोग से इस परियोजना कार्य को सम्पूर्ण करने को प्रयास किया है।

और मैं अपनी गुरुजी, सहपाठि तथा अपनी माता पिता को आभारि हूँ।

धन्यवाद

ममताज बेगम

विषयानुक्रम

KHARUPETIA COLLEGE
Estd - 1991
KHARUPETIA, DARRANG

विषयवस्तु

(i) भूमिका
(ii) जन्म एवं वंश परिचय / शिक्षा
(iii) दिनकर जी का व्यक्तित्व
(iv) साहित्यिक रचनाएं एवं कृतित्व
(v) रामधारी सिंह दिनकर जी की प्रमुख कहानियों की समीक्षा
(vi) उनकी प्रमुख काव्यों की समीक्षा
(vii) दिनकर की काव्यगत विशेषताएँ
(viii) दिनकर की भाषा शैली
(ix) साहित्य में योगदान
(x) स्थान और पुरस्कार
(xi) राष्ट्रीय चेतना
(xii) राष्ट्र प्रेम
(xiii) निष्कर्ष
(xiv) सहायक ग्रंथ सूची

KHARUPETIA COLLEGE
KHARUPETIA, DARRANG

भूमिका

रामधारी सिंह 'दिनकर' हिंदी के प्रमुख लेखक, कवि व निबंधकार थे। वे आधुनिक युग के श्रेष्ठ वीर रस के कवि के रूप में स्थापित हैं। 'दिनकर' स्वतंत्रता पूर्व एक विद्रोही कवि के रूप में स्थापित हुए और स्वतंत्रता के बाद 'राष्ट्रकवि' के नाम से जाने गए। वे छायावादोत्तर कवियों की पहली पीढ़ी के कवि थे। एक ओर उनकी कविताओं में ओज, विद्रोह, आक्रोश और क्रांति की पुकार है तो दूसरी ओर कोमल श्रृंगारिक भावनाओं की अभिव्यक्ति है।

दिनकर में संवेदना और विचार का बड़ा सुन्दर सामंजस्य दिखाई पड़ता है। चाहे व्यक्तिगत प्रेम सौन्दर्य-मूलक कविताएँ हो, चाहे राष्ट्रीय कविताएँ, सभी कवि की संवेदना से स्पंदित हैं। दिनकर जी में आरम्भ से ही अपने को अपने परिवेश से जोड़ने की ललक दिखाई पड़ती है, इसलिए उनमें सर्वत्र एक खुला-पन है, लोकोन्मुखता है। सहजता भी है। व्यक्तिगत-प्रेम-सौन्दर्य मूलक कविताओं में भी। छायावाद या उत्तर छायावादी वैयक्तिक कविता की कुंठा, अतिरिक्त अवसाद तथा निराशा के घिराव के स्थान पर प्रसन्नता और सर्वत्र सौन्दर्य के प्रति स्वस्थ मानवीय प्रतिक्रिया दिखाई पड़ती है।

रामधारी सिंह दिनकर जी एक भारतीय हिंदी कवि, निबंधकार, पत्रकार और स्वतंत्रता सेनानी थे।

रामधारी सिंह दिनकर जी को सबसे प्रमुख हिंदी कवियों में से एक के रूप में याद किया जाता है। आजादी से पहले लिखी गई उनकी राष्ट्रवादी कविताओं ने उन्हें 'राष्ट्रीय कवि' की पहचान दिलाई थी।

दिनकर जी ने शुरू में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान क्रांतिकारी आन्दोलन का समर्थन किया। लेकिन बाद में वह गाँधीवादी बन गए। हालांकि वे खुद को "बुरा गाँधीवादी" कहते थे क्योंकि उन्होंने युवाओं में आक्रोश और बदले की भावनाओं का समर्थन किया था।

दिनकर जी के साहित्यिक जीवन की विशेषता यह थी कि वे राजनीति में शामिल होने के बावजूद सरकारी सेवा में रहते हुए स्वतंत्र रूप से साहित्य की रचना करते रहते थे। उनकी साहित्यिक चेतना उसी प्रकार राजनीति से विलग रही, जिस प्रकार कमल जल में रहकर भी जल से पृथक रहता है।

रामधारी सिंह दिनकर ने राष्ट्रीय भावनाओं से भरे क्रांतिकारी संघर्ष को प्रेरित करनेवाली अपनी कविताओं के कारण लोकप्रियता हासिल की।

आधुनिक हिन्दी-साहित्य के इतिहास का सिंहावलोकन करने पर स्पष्ट ज्ञात होता है कि कविता के क्षेत्र में जन-जागरण की ओर सर्वप्रथम ध्यान भारतेंदु हरिश्चन्द्र का गया था। कवि दिनकर की हुंकार ऐसी रचना है, जिसमें यौवन की हुंकार भरी हुई है, नागिनी की भाँति क्रांति की तीव्र भावना भरी हुई है।

KHARUPETIA COLLEGE
Estd - 1984
KHARUPETIA, DARRANG

सहायक ग्रंथों सूची

लेखक/लेखिका के नाम	ग्रंथों के नाम	प्रकाशक
(i) डॉ दूधनाथ प्रसाद सक्सेना	हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि	अग्रवाल पब्लिकेशन्स
(ii) राम प्रसाद गोस्वामी	दिनकर और उनकी रश्मिरथी	असम हिन्दी प्रकाशन
(iii) ओ शेखर	दिनकर और रश्मिरथी	प्रकाशन केन्द्र लखनऊ
(iv) डॉ नगेन्द्र	हिन्दी साहित्य का इतिहास	
(v) डॉ बिजय पाल सिंह	आधुनिक काव्यधारा	अनुराग प्रकाशन

गौहाटी विश्वविद्यालय के अंतर्गत
बी.ए. 6th सेमिष्टर की अंतिम परीक्षा 2023,
मुख्य विषय- हिन्दी की दूसरा परचा के लिए प्रस्तुत
शैक्षणिक परियोजना कार्य

विषय:-

रामधारी सिंह दिनकर के काव्य में नारिप्रेम और सौन्दर्य

निर्देशक :

सिकदार आनवारुल इसलाम

सहयोगी अध्यापक एवं विभागाध्यक्ष

हिन्दी विभाग, खारुपेटीया महाविद्यालय

जिला- दरंग (असम)

प्रस्तुतकर्ता:-

प्रतिभा शर्मा

बी.ए. 6th सेमिष्टर

मुख्य विषय:- हिन्दी

खारुपेटीया महाविद्यालय

रोल UA-201-248 नं- **0241**

पंजीयन नं : 20049509 सन: 2020-21

DEPARTMENT OF HINDI
ESDT-2081
Date:
Kharupetia College, Darrang (Assam)

KHARUPETIA COLLEGE
Estd - 1981
KHARUPETIA, DARRANG

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित करते हुए मुझे हर्ष होता है कि **प्रतिभा शर्मा** ,बी.ए. 6th सेमिष्टर, खारुपेटीया महाविद्यालय ने मेरे निर्देशन में **"रामधारी सिंह दिनकर के काव्य में नारिप्रेम और सौन्दर्य"** विषय पर शैक्षणिक परियोजना कार्य प्रस्तुत की है, जो दूसरा(HIN-HC-6026) परचे के बदले में है। **प्रतिभा शर्मा** ने मनोयोग पूर्वक प्रस्तुत परियोजना कार्य की है; जिसका पूर्ण या आंशिक रूप कहीं भी प्रकाशित नहीं हुआ है। मैं प्रस्तुत लघु-परियोजना कार्य हेतु परीक्षक नियुक्त किए जाने की संस्तुति करता हूँ।

Mausumi Saha Kalita

Digitally signed by Mausumi Saha Kalita
Date: 2024.06.26 21:06:50 +05'30'

निर्देशक:

Associate Professor & HoD
Department Of Hindi
Kharupetia College.

सिकदार आनवारुल इसलाम
सहयोगी अध्यापक एवं विभागाध्यक्ष
हिन्दी विभाग, खारुपेटीया महाविद्यालय
जिला- दरंग (असम)

विषय वस्तु	विषयानुक्रम	पृष्ठ नं

① जन्म एवं जीवन परिचय .... 1 – 3
② बाल्यकाल एवं शिक्षा .... 4 – 7
③ वैवाहिक जीवन एवं पारिवारिक माहौल .... 8 – 9
④ व्यवसाय .... 10 – 13
⑤ व्यक्तित्व परिचय .... 14 – 18
⑥ भावप्रवण व्यक्ति के रूप में 19
⑦ संवेदनशील व्यक्ति के रूप में 20
⑧ क्रोधी स्वभाव .... 21 – 24
⑨ खान-पान एवं रहन सहन .... 25 – 27
⑩ राजनीति के क्षेत्र में दिनकर .... 28 – 30
⑪ 'दिनकर' जी पर गांधीवाद का प्रभाव .... 31 – 34
⑫ 'दिनकर' जी का विदेश भ्रमण 35
⑬ सम्मान-पुरस्कार एवं पदवियाँ .... 36 – 37
⑭ 'दिनकर' का कृतित्व एवं पद्य साहित्य .... 38 – 41
⑮ प्रतिनिधि रचनाएँ और महाकाव्य .... 42 – 43
⑯ 'दिनकर' के काव्य की विशेषताएँ .... 44 – 49
⑰ 'दिनकर' के काव्य में नारी .... 50 – 52
⑱ 'दिनकर' के काव्य में नारी प्रेम और सौंदर्य .... 53 – 60
⑲ उपसंहार 61

KHARUPETIA COLLEGE Estd : 1981 KHARUPETIA, DARRANG

KHARUPETIA COLLEGE
Estd - 1981

भूमिका

प्रसिद्ध कवि और निबन्धकार रामधारी सिंह 'दिनकर' छायावादोत्तर राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना और व्यक्तिगत सौंदर्य मूलक प्रेम-संवेदना दोनों के सशक्त कवि हैं। दिनकर में संवेदना और विचार का बहुत सुंदर समन्वय दिखाई पड़ता है। चाहे राष्ट्रीय कविताएँ हो, चाहें राष्ट्रीय कविताएँ हो, सभी कवि की संवेदना से संचित है। दिनकर में आरंभ से ही अपने को अपने परिवेश से जोड़ने की तलब दिखाई पड़ती है इसलिए उनमें खुलापन है, "दिनकर" जी निराशा के विराव के स्थान पर प्रसन्नता और सौंदर्य के प्रति स्वस्थ मानवीय प्रतिक्रिया दिखाई पड़ती है। दिनकर की सबसे बड़ी विशेषता है अपने देश और युग के प्रति जागरूकता। कवि देश और काल के सत्य को अनुभूति और चिंतन दोनों स्तरों पर ग्रहण करने में समर्थ हुआ है।

KHARUPETIA COLLEGE Estd - 1981

प्रस्तुत परियोजना कार्य में रामधारी सिंह 'दिनकर' जी के काव्य में नारीप्रेम और सौन्दर्य पर प्रकाश डाला गया है। यह परियोजना कार्य प्रस्तुत करने में मैं गुवाहाटी विश्वविद्यालय 6th सेमिस्टर के माध्यम से अनुमति प्रदान किया है, जिनके प्रति मैं आभार प्रकट करती हूँ। इस परियोजना कार्य का चुनाव मैं अपनी रुची तथा निर्देशक श्रद्धा पर क सिकदार आनवारुल इसलाम अध्यापक, एवं विभागाध्यक्ष हिन्दी विभाग, खारुपेटीया कॉलेज, महोदय के परामर्श एवं सही निर्देशन तथा विचार-विमर्श के साथ किया गया।

इस परियोजना को सफलतापुर्वक पूरा करने में बहुत से लोगों ने मेरी मदद की है। मैं उन सभी लोगों को धन्यवाद देना चाहूँगी जो इस परियोजना से सम्बन्धित है।

मुख्य रूप से मैं इस परियोजना को सफलता के साथ पूरा करने में सहाग होने के पहले

ईश्वर को धन्यवाद करती हूँ, फिर मैं अपने मुख्य अध्यापक सिकदार आनवारुल इसलाम जी को दूंगी, जिनके मार्गदर्शन में मैंने इस परियोजना के बारे में बहुत कुछ सीखा। उनके सुझाव और निर्देशों ने इस परियोजना को पूरा होने में बहुत मदद की है।

फिर मैं अपने माता-पिता और मेरे सहपाठीओं को धन्यवाद देना चाहती हूँ जिन्होंने अपने मूल्यवान सुझावों और मार्गदर्शन के साथ मेरी मदद की है और परियोजना के पूरा होने के विभिन्न चरणों में बहुत मददगार रहे हैं।

प्रतिभा रानी

PETIA COLLEGE Estd - 1981

रामधारी सिंह दिनकर का जीवन परिचय

रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म 23 सितंबर 1908 को बिहार के बेगूसराय जिले के सिमरिया गांव में हुआ था। उनके पिता का नाम रवि सिंह और माता का नाम मनरूप देवी था। दिनकर के पिता एक साधारण किसान थे और जब दिनकर दो वर्ष के थे, तब उनके पिता की मृत्यु हो गई थी। इसीलिए दिनकर और उनके भाई-बहनों का पालन-पोषण उनकी विधवा माँ ने किया था। दिनकर का बचपन देहात में बीता, जहा दूर-दूर तक फैली खेतों की हरियाली, आम के बाग और कंसास का फैलाव था। प्रकृति की इस सुंदरता का प्रभाव दिनकर के मन में बस गया, शायद इसीलिए उनपर वास्तविक जीवन की कठोरता का भी अधिक गहरा प्रभाव पड़ा। रामधारी सिंह 'दिनकर' हिंदी के प्रमुख लेखक, कवि व निबंधकार थे। वे आधुनिक युग के श्रेष्ठ वीर रस के कवि के रूप में स्थापित है। 'दिनकर' स्वतन्त्रता पूर्व एक विद्रोही कवि के रूप में स्थापित हुए, और स्वतन्त्रता के बाद

'राष्ट्रकवि' के नाम से जाने गये वे छायावादोत्तर कवियों की पहली पीढ़ी के कवि थे। तेज और उनकी कविताओं में ओज, विद्रोह, आक्रोश और क्रान्ति की पुकार है तो दूसरी ओर कोमल शृंगारिक भावनाओं की अभिव्यक्ति है। इन्हीं दो प्रवृत्तियों का चरम उत्कर्ष हमें उनकी कुरुक्षेत्र और उर्वशी नामक कृतियों में मिलता है। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा गाँव की पाठशाला में ही हुई। अपने विद्यार्थी जीवन से ही इन्हें अधिक कष्ट झेलने पड़े। आपने विद्यालय के लिए घर से पैदल दस मील रोज आना जाना इनको बिताना थी। इन्होंने हाईस्कूल की परीक्षा मोकामा घाट पर स्थित रेलवे हाईस्कूल से उत्तीर्ण की। रामधारी सिंह 'दिनकर' पेशा से कवि, लेखक, निबंधकार, साहित्यिक आलोचक, पत्रकार, अंग्रेजकार, स्वतंत्रता सेनानी और संसद सदस्य थे। उनकी कविताओं में 'वीर रस' का भाव है और उनमें किसी भी राष्ट्रवादी को प्रेरित करने की क्षमता थी।

रामधारी सिंह 'दिनकर' जी का बचपन ग्रामीण परिवेश में प्राय: कई कठिनाईयों को पार करके गुजरा था। रामधारी सिंह 'दिनकर' जी परिवार जी के परिवार की स्थिति नहीं थी कि वह अत्यधिक प्यार और दुलार में जी सके। रामधरि सिंह 'दिनकर' जी ने बचपन में ग्रामीण लोगों की स्थिति एवं सामाजिक परिवेश की स्थिति को देख था। जिसे अमीर घरों में पलनेवाले लड़के देख नहीं पाते।

प्रतिभा शर्मा
बी. ए. 6th सेमिस्टर
मुख्य विषय :- हिन्दी
खरुपेटिया महाविद्यालय
रोल UA-201-248 नं - 0241

KHARUPETIA COLLEGE Estd - 1981 KHARUPETIA, DARRANG

रामधारी सिंह 'दिनकर' जी की शिक्षा

दिनकर जी के परिवार की स्थिति पिता के अवसान के बाद कुछ विषम-सी गई थी। बड़े भाई बसन्तसिंह की भी पढ़ने में अधिक रुचि थी, पर उन्होंने देखा कि खेती ठीक से हो नहि रही है इसीलिए वे खेती में जुट गए और दिनकरजी के बारे में कहने लगे कि - "नुनू" (दिनकर) जी तो पढ़-लिखकर हाकिम बनने के लिए ही पैदा हुआ है। ऐसा सुन्दर सुकुमार व्यक्ति खेत की धूप-वर्षा झेल नहीं पायेगा। जब खेती मुझे ही करनी है तो आगे पढ़कर क्या करूंगा?"।

इस प्रकार बसन्तसिंह ने यह निर्णय लेकर दिनकरजी की शिक्षा का प्रारंभ करवाया। दिनकर जी की प्रारंभिक शिक्षा सिमरिया के मिडिल स्कुल में ही सम्पन्न हुई। मिडिल उत्तीर्ण करने बाद उन्होंने मुकमा-घाट के स्कुल से एंट्रेंस की परीक्षा उत्तीर्ण की।

वहाँ उन्हें शिक्षा के लिए प्रातः उठकर पाँच - छः मील की दूरी पर स्थित स्कूल में जाना पड़ता था। दिनकरजी का जीवन बड़ी विषम स्थितियों से होकर गुजरा था। इसी विषमता ने उन्हें निर्भीक साहित्यकार बना दिया।

"गर्मी के मौसम में रेत दहकती चिनगारियां बन जाती थी। बरसात में गंगा की लहरें ऊँचे-ऊँचे कगारों को काटकर आत्मसात कर लेती तो भयंकर आवाज से आसपास के इलाके काप उठते थे। फिर भी, दिनकरजी की विद्यायात्रा में विराम नहीं आया। कदाचित वही दहकती रेत और टूट-टूटकर गिरते कगारों का घोष बाद में चलकर दिनकरजी की कविताओं में ओज बनकर प्रकट हो उठा है।

प्रारंभ से ही विद्यार्जन दिनकरजी के लिए साधना के रूप में आया। वह साधना यद्यपि परिस्थितिजन्य थी, परन्तु उसने उनको एक कर्मठ जीवन - दर्शन प्रदान किया, जिसके परिणाम स्वरूप आज वह इतने निर्भीक साहित्यकार बन सके हैं। प्रारंभिक शिक्षा दिनकरजी ने एक राष्ट्रिय

KHARUPETIA COLLEGE KHARUPETIA, DARRANG